International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 3, March 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

21वीं सदी के समाज में समाचार पत्रों की भूमिका

प्रभात कुमार शोधार्थी

कु. मायावती गवर्नमेंट महिला पी.जी. कॉलेज

बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

सार (Abstract)

21वीं सदी को कुशल सूचना एवं तकनीकी माध्यमों की पहुँच में तीव्र विस्तार हुआ है, जनसंचार के माध्यम रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र किसी भी समाज अथवा राष्ट्र की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रतिबिम्ब होते हैं। जनसंचार के सभी माध्यमों में समाचार पत्र समाज निर्माण में अपेक्षाकृत अधिक सशक्त भूमिका का निर्वहन करते हैं। समाचार पत्रों का प्रचलन आरम्भ होने के बाद से ही वे मानव के दृष्टिकोण एवं विचारों को प्रभावित करते रहे हैं। विभिन्न देशों में संपन्न होने वाली सामाजिक एवं राजनीतिक क्रान्तियों में समाचार पत्रों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। समाचार पत्रों की इसी महत्वपूर्ण भूमिका को दृष्टिगत रखते हुए इसे लोकतन्त्र का चौथा स्तमभ कहते है। आज के दौर में मीडिया कई रूपों से हमारे समक्ष है, यथा –इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया इत्यादि जोकि आसानी से हमारे बीच सूचनाओं एवं खबरों को प्रस्तुत कर रहे हैं, इस विधि समाचार पत्रों का चलन अपेक्षाकृत कम जरूर हुआ है लेकिन उनकी महत्ता एवं विश्वसनीयता आज भी उतनी है।

बीज शब्द : जनसंचार, सोशल मीडिया, चौथा स्तम्भ, सूचना एवं तकनीकी।

मीडिया अर्थात् जनसंचार के माध्यम (रेडियो, टेलिविजन, समाचार पत्र इत्यादि) किसी भी समाज अथवा राष्ट्र की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रतिबिम्ब होते हैं। जनसंचार के सभी माध्यमों में समाचार पत्र समाज निर्माण में अपेक्षाकृत अधिक सशक्त भूमिका का निर्वहन करते हैं। समाचार पत्रों का प्रचलन आरम्भ होने के बाद से ही वे मानव के दृष्टिकोण एवं विचारों को प्रभावित

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 3, March 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

करते रहे हैं। विभिन्न देशों में सम्पन्न होने वाली सामाजिक एवं राजनीतिक क्रांतियों में समाचार पत्रों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। समाचार पत्रों की इसी महत्वपूर्ण एवं सशक्त भूमिका को दृष्टिगत रखते हुए इसे 'लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ' का अलंकरण प्रदान किया गया है।

समाचार पत्रों के प्रचलन के समय से लेकर वर्तमान समय तक परिस्थितियों में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है और आज समाचार पत्रों की जन–साधारण तक पहुंच सरल हो गई है, जिसके परिणामस्वरूप समाचार पत्र समाज के प्रत्येक वर्ग की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करने हेतु सक्षम हो गए हैं। आज समाचार पत्र हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन गए हैं। आधुनिक समाचार पत्रों द्वारा सरकरों के निर्माण एवं विघटन, विविध विषयों पर जनमत का निर्माण करने तथा पाठकों की मनोस्थिति को प्रभावित करने जैसी व्यापक भूमिकाओं का निर्वहन कर रहे हैं।

समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में सामाजिक जीवन के समस्त पक्ष सम्मिलित होते हैं, जैसे – स्थानीय समाचार, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय समाचार, खेल स्पर्द्धाएं, व्यापार एवं अर्थशास्त्र, फैशन शो, बच्चों एंव युवाओं पर लेख, शिक्षा एवं रोजगार के अवसर, सिनेमा इत्यादि। इसके अतिरिक्त समाचार पत्र देश की राजनीतिक गतिविधियों के संचालन में भी महत्वपूर्णा भूमिका निभा रहे हैं। समाचार पत्र सरकार एवं साधारण जनता के मध्य एक पुल का कार्य करते हैं। वे जनता की अपेक्षाएं सरकार तक तथा सरकार की बात एवं नीतियों इत्यादि को जनता तक पहुँचाते हैं। इस प्रकार वर्तमान समय में समाचार पत्रों ने लोकतंत्र के एक सजग प्रहरी का स्थान ग्रहण कर लिया है।

भारत के स्वाधीनता संघर्ष में भी समाचार पत्रों ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन् किया। भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत राजा राममोहन राय सहित अन्य समाज सुधारकों ने भी अपने धार्मिक एवं सामाजिक सुधार कार्यक्रमों को विस्तार प्रदान करने तथा उन्हें जन–जन तक पहुँचाने हेतु समाचार पत्रों का ही सहारा लिया। इनके माध्यम से ही देशभक्ति की भावना का संचार अखिल भारतीय स्तर पर हुआ, जिसके कारण देशभक्तों ने स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए हंसते–हंसते कुर्बानी दे दी।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 3, March 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक (मराठा, केसरी), सुरेन्द्रनाथ बनर्जी (बंगाली), भारतेंदु हरिश्चंद्र (संवाद कौमुदी), लाला लाजपत राय (न्यू इंडिया), अरविंद घोष (वंदे मातरम्), महात्मा गांधी (यंग इंडिया, इण्डियन ओपीनियन व हरिजन), आदि महान नेताओं एवं राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के संचालकों ने विभिन्न भाषाई समाचार पत्रों के माध्यम से ब्रिटिश शासन की शोषणकारी नीतियों एवं कार्यों को उजागर करके जन–सामान्य तक पहुंचाया। इन समाचार पत्रों से संपूर्ण विश्व में अत्याचारपूर्ण ब्रिटिश शासन का प्रचार होता था। समाचार पत्रों की इस बहुआयामी भूमिका के कारण ही ब्रिटिश शासन द्वारा प्रेस पर कठोर प्रतिबंध आरोपित किये गये तथा समाचार पत्रों एवं उनके संचालकों को अराजक घोषित कर दिया गया। किंतु समाचार पत्रों द्वारा उत्पन्न किये गये जन–उभारने स्वतंत्रता प्राप्ति के लक्ष्य को प्राप्त करने में बहुमूल्य योगदान दिया।

समाचार पत्र एक ओर जहां देश की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों एवं गतिविधियों की जानकारी प्रदान करते हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों से भी जन–साधारण को अवगत कराते हैं। समाचार पत्रों के अभाव में लोकतंत्र सर्वथा अकल्पनीय है। समाचार पत्रों को जनता की तीसरी आंख भी कहा जाता है।

समय एवं स्थितियों में परिवर्तन करने के साथ–साथ समाचार–पत्रों के कार्यक्षेत्र का दायरा भी अत्यधिक बढ़ गया है। एक सभ्य समाज में उनकी भूमिका बहु–आयामी है तथा वर्तमान समय में राजनीति के अपराधीकरण एवं भ्रष्टाचार के वातावरण में समाचार–पत्रों के उत्तरदायित्वों में अत्यधिक वृद्धि हुई है। भ्रष्टाचार में संलिप्त नेताओं एवं सरकारी अधिकारियों का पर्दाफाश करने तथा असामाजिक तत्वों को सजा दिलाने में वे अपनी भूमिका का आदर्श निर्वहन् करते हैं। समाचार–पत्रों द्वारा अपने विश्लेषणों के माध्यम से व्यापक स्तर पर जनमत तैयार किया जाता है। वर्तमान समय में साधारण जनता कार्यपालिका तथा/अथवा व्वयस्थापिता से अधिक विश्वास समाचार–पत्रों एवं न्यायपालिका पर करती है।

एक शक्तिशाली समाज के निर्माण में समाचार–पत्र अपना अमूल्य योगदान देते हैं। साथ ही वे इस तथ्य का भी सदैव ध्यान रखते हैं कि उनके द्वारा दी गई सूचनाओं से राष्ट्र की अस्मिता एवं अखण्डता पर कोई आंच न आए। तथ्यों एवं सतय को पूर्ण रूप से जनता के समक्ष रखने के लिए समाचार–पत्रों को पर्याप्त स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है ओर यह स्वतंत्रता उन्हें संविधान द्वारा अनुच्छेद–19(1)(क) के माध्यम से प्रदान की गई है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 3, March 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कहा जाता है कि कलम की ताकत तलवार से अधिक हाती है, जो कि सत्य भी है क्योंकि तलवार के वार से तो मात्र एक ही व्यक्ति घायल होता है किंतु कलमत द्वारा लिखे गए एक कटु वाक्य मात्र से ही लाखों–करोड़ों लोगों के हृदय घायल हो सकते हैं। कलम की अपरिमित शक्ति के कारण ही प्रसिद्ध तानाशाह नेपोलियन बोनापार्ट शत्रु से अधिक विरोधी समाचार–पत्रों से डरता था। समाचार–पत्र जन–मानस को एक ऐसी निष्पक्ष दृष्टि प्रदान करते हैं, जिससे जनता स्वयं सत्य एवं असत्य, सही और गलत में भेद कर सके। मीडिया के लिए सभी राजनीतिक दल एवं नेतागण एक समान होते हैं, आदर्श पत्रकारिता के भीतर पक्षपात के लिए कोई स्थान नहीं है।

समाचार–पत्रों के अभाव में स्वस्थ लोकतंत्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती। सरकार द्वारा बनाई जाने वाली लोक कल्याणकारी योजनाओं एवं नीतियों को जनता तक पहुंचाने का कार्य समाचार–पत्र द्वारा ही किया जाता है। विश्व की कोई भी क्रांति एवं आंदोलन समाचार–पत्रों के सहयोग के बिना नहीं हो सका है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज के अभाव में मनुष्य का अस्तित्व ही सम्भव नहीं है। समाचार–पत्रों से हमारा समाज व्यापक रूप से प्रभावित होता है। अतः यह ठीक ही कहा गया है कि, ''यदि किसी समय के समाज की स्थिति जानती हो तो उस समय के समाचार–पत्रों को देखो।''

संदर्भ सूची

- शैनॅन. ई. मार्टिन – द फंक्शन ऑफ न्यूजपेपर्स इन सोसाइटी–ए ग्लोबल पर्सपेक्टिव।
- कोहली, वनिता – इंडियन मीडिया बिजनेस (द्वितीय संस्करण), रिस्पांस बुक, नई दिल्ली।
- सोनवॉकर, प्रसून – इंडिया : मेकिंग ऑफ लिटिल कल्चरल मीडिया इंपीरियलिज्म, इंटरनेशनल कम्यूनिकेश गेजेट।